आपदा में अवसर...अवैध अस्पताल, बैंक्वेंट हॉल खड़े कर दिए गए

एनएच 3 और सूरजकुंड रोड पर धड़ल्ले से अवैध निर्माण

लॉकडाउन के बावजूद एनएच-3 में यह अस्पताल बन गया

सूरजकुंड रोड पर पेड़ काटकर भव्य बैंक्वेट हॉल का निर्माण दिन-रात जारी है जबकि एनजीटी के आदेश है कि यहां निर्माण नहीं हो सकता

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

फरीदाबाद: एक तरफ शहर में कोरोना फैला हुआ है तो दूसरी तरफ तमाम इलाकों में तेजी से अवैध निर्माण जारी है। कई जगह तो पूरी बिल्डिंग ही खड़ी कर दी गई है तो कुछ जगहों पर रात में काम हो रहा है। एनआईटी नंबर 3 में तो पूरा अस्पताल ही खड़ा कर दिया गया और अब वहां आखिरी दौर का काम चल रहा है। इसी तरह अरावली में सूरजकुंड रोड पर एनजीटी की गाइडलाइंस के विपरीत एक बहुत बड़े बैंक्वेट हॉल का निर्माण किया जा रहा है। इसके अलावा भी बहुत से इलाकों में अवैध निर्माण की गतिविधियां राजनीतिक संरक्षण में जारी हैं। नगर निगम फरीदाबाद (एमसीफ) के अधिकारी कोविड 19 का बहाना लेकर ऐसी अवैध गतिविधियों पर कार्रवाई से बच रहे हैं।

अस्पताल का अवैध निर्माण पूरा

एनएच 3 सी में ईएसआई मेडिकल कॉलेज के ठीक सामने सनराइज के नाम से पूरा अस्पताल ही अवैध ढंग से खड़ा कर दिया गया है। हालांकि 2016 में खुद एमसीएफ ने इस प्लॉट पर अवैध निर्माण कराए जाने के खिलाफ पुलिस में एफआईआर दर्ज करा रखी है। यहां पर लंबे समय तक निर्माण रुका रहा। लेकिन कोरोना ने जब पैर पसारे तो आपदा में अवसर का फायदा प्लॉट के मालिक ने उठा लिया। अब वहां सनराइज अस्पताल का बोर्ड लगा दिया गया है। वहां रातदिन काम चल रहा है ताकि कोविड सीजन के दौरान ही अस्पताल को शुरू करके मोटा पैसा कमाया जा सके। एमसीएफ अफसरों को इस अवैध निर्माण की पूरी जानकारी है लेकिन किसी तरह की कार्रवाई नहीं की गई। यह जांच का विषय है कि रिहायशी इलाके में एमसीएफ के किस कागज के आधार पर यहां अस्पताल खड़ा कर दिया गया। क्या प्लॉट मालिक ने लैंड यूज बदलवाया या नक्शा पास कराया। इन सवालों के जवाब एमसीएफ के पास ही हैं। एक बार अस्पताल शुरू हो जाने पर यहां एमसीएफ कार्रवाई भी नहीं कर पाएगा क्योंकि तब कोरोना की दुहाई देकर अस्पताल को चलाने की मांग की जाएगी।

अरावली में बन रहा बड़ा बैंक्वेट हॉल

सूरजकुंड रोड पर सिद्धदाता आश्रम के ठीक सामने 22 एकड़ पर एक बहुत बड़े बैंक्वेट हॉल का निर्माण धड़ल्ले से जारी है। यहां पर किसी उज्जवल फॉर्म का बोर्ड लगा है। इस जमीन पर सैकड़ों पेड़ थे, जिन्हें काटकर इसका निर्माण किया जा रहा है। हालांकि एनजीटी की तरफ से आदेश है कि यहां अब कोई पक्का निर्माण नहीं किया जा सकता। इस संबंध में इसी जमीन का एक मामला (केस नंबर 775/2019) एनजीटी में पहले से ही विचाराधीन है। लेकिन एनजीटी से बिना कोई आदेश हुए यहां पेड़ काट दिए गए और लॉकडाउन के समय अवैध निर्माण कराया जा रहा है। यह जगह फॉरेस्ट लैंड हैं लेकिन समझा जाता है कि वन विभाग, एमसीएफ और प्रदूषण नियंत्रण विभाग के अधिकारी इस अवैध निर्माण में शामिल हैं। सूत्रों का कहना है कि शहर के एक बहुत बड़े नेता का आशीर्वाद लेकर इस अवैध निर्माण को अंजाम दिया जा रहा है। इसी वजह से तमाम सरकारी एजेंसियां चुप हैं। शहर का बड़ा नेता खुद भी बिल्डर और प्रॉपर्टी डीलर है। समझा जाता है कि इस बड़े प्रोजेक्ट में हिस्सेदारी के बिना इतने बड़े बैंक्वेट हॉल का निर्माण संभव ही नहीं है।

किसने कहने पर काटे गए पेड़

फरीदाबाद बाईपास पर करीब 50 पेड़ सड़क को चौड़ा करने के नाम पर काट डाले गए। इनमें सबसे ज्यादा पीपल के हरे-भरे पेड़ थे। आक्सीजन संकट के समय पीपल के पेड़ काटना महापाप है लेकिन नेताओं और माफिया के लिए वो महज पेड़ हैं। इस संबंध में एक एनजीओ ने अपने सोशल मीडिया हैंडल पर लिखा है कि जब उस एनजीओ के कार्यकर्ताओं ने पेड़ काटने वालों से जाकर पूछा कि ये पेड़ किसके कहने पर काटे जा रहे हैं तो पेड़ काटने वाले कर्मचारियों का जवाब था कि हम लोगों पर मंत्री जी का बहुत दबाव है। एनजीओ ने यह साफ नहीं किया कि पेड़ काटने वालों ने उनके कार्यकर्ताओं के सामने किस मंत्री का नाम लिया था।

मोदी के दरबार से भी पद्मश्री कंगना रनौत को भगाया

सरकार के निर्देश पर ट्विटर ने उसका एकाउंट हटाया

मज़दूर मोर्चा ब्यूरो

नई दिल्ली- ट्विटर ने कंगना का अकाउंट सस्पेंड कर दिया है। वही कंगना जिसे मोदी सरकार पद्मश्री दे चुकी है और हाल ही में उसे वाई श्रेणी की सुरक्षा भी दी गई। कंगना ने अपने एक ट्वीट में न केवल अशिष्ट भाषा का इस्तेमाल किया बल्कि मोदी से 2002 का नरसंहार दोहराने के लिए भी कहा था। कंगना की मानसिक हालत के बारे में सबको पता है, मगर वे इस हद तक जाएंगी, किसी ने नहीं सोचा था। इस बार तो उन्होंने मोदी की वास्तविक छवि को भी सार्वजनिक करके बीजेपी को धर्मसंकट में डाल दिया। मोदी दरबार से कंगना को विदा कर दिया गया है। कंगना से कहा गया है कि वो मोदी के संबंध में किसी भी तरह का बयान न दे।

सोचिए, जो कुछ कंगना ने अपने ट्वीट में लिखा है अगर किसी दूसरे धर्म को मानने वाले या अन्य पार्टी के व्यक्ति ने लिखा होता तो क्या होता? योगी तुरंत एनएसए और यूएपीए लगाकर जेल में ठूंस देते और ज़मानत भी न होने देते।

किसने कराया डिलीट

कंगना का ट्विटर एकाउंट केंद्रीय क़ानून मंत्री रविशंकर प्रसाद ने डिलीट कराया है। गुजरात दंगों के बारे में कंगना वो सच बोल गई, जिसका नरेंद्र मोदी अब तक खंडन करते रहे हैं। इस समय मीडिया या सोशल मीडिया में मोदी के ख़िलाफ़ अगर कुछ छपता या दिखाया जाता है तो उस डैमेज को कंट्रोल करने की ज़िम्मेदारी रविशंकर प्रसाद पर ही है। प्रसाद के ही निर्देश पर ट्विटर ने कंगना का एकाउंट स्थायी रूप से डिलीट कर दिया। बॉलिवुड की किसी भी एक्ट्रेस का ट्विटर एकाउंट अभी तक इतनी बेइज़्ज़ती करते हुए डिलीट नहीं किया गया था।

ये वही कंगना है जिसे भारत सरकार ने वाई श्रेणी सुरक्षा दी थी। भाजपा के भक्त लोग उसका गुणगान करते नहीं थकते थे। उसने एक्टर सुशांत सिंह राजपूत की खुदकुशी को विवादास्पद बनाया और बॉलिवुड के तमाम निर्देशकों और अभिनेताओं को लपेटने की कोशिश की। लेकिन स्थिति अब पलट चुकी है।

फ़ैशन डिज़ाइनरों ने छोड़ा साथ

मशहूर फैशन डिजाइनर आनंद भूषण ने कहा कि- आज जो कुछ भी हुआ उसके मद्देनजर हमने ये निर्णय लिया है कि हम कंगना संग अपने सारे अनुबंधों को सभी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स से हटा रहे हैं। साथ ही हम ये प्रण भी ले रहे हैं कि हम आगे कभी भी कंगना संग कोई भी करार नहीं करेंगे। एक ब्रांड के तौर पर हम कभी भी ऐसे हेट स्पीचेज को बढ़ावा नहीं देंगे।

फैशन डिजाइनर आनंद भूषण के अलावा रिमझिम दादू ने भी ट्विटर पर कंगना रनौत संग अपने सभी कोलाबोरेशन को तोड़ दिया है। उन्होंने कंगना संग अपनी तस्वीर शेयर करते हुए लिखा कि- सही चीजें कभी भी की जाएं उसे देर से होना नहीं कहते। हम अपने सभी सोशल मीडिया चैनल्स से कंगना रनैत संग अपने सभी पोस्ट्स और कोलाबोरेशन खत्म कर रहे हैं। भविष्य में हम उनके साथ कभी भी नहीं जुड़ेंगे।

कंगना ने नफरत को दिया बढ़ावा

पिछले कुछ समय से कंगना रनौत लगातार ट्विटर की गाइडलाइन्स को ब्रेक कर रही थीं और भड़काऊ मैसेज लिख रही थीं। वेस्ट बंगाल में हुए चुनाव को लेकर और साथ ही मुख्यमंत्री ममता बनर्जी पर कंगना द्वारा आपत्तिजनक टिप्पणी करने के बाद ट्विटर ने ये बड़ा फैसला लिया। कंगना रनौत ने इंस्टाग्राम पर भी एक वीडियो शेयर किया जिसमें वे रो रही थीं और सरकार से बंगाल में प्रेसिडेंट रूल लगाने की बात कर रही थीं।

मोदी के राज्य में ऑक्सीजन सिलेंडर प्लांट पड़े हैं बंद

दिलीप खान

अहमदाबाद। देश में इस वक़्त दायां हाथ क्या कर रहा है, ये बाएं हाथ को पता नहीं। मामला ऑक्सीजन प्लांट का है. जब अयोग्य, अक्खड़, मक्कार, मूर्ख और लफ़्फ़ाज़ प्रधानमंत्री हों, तो देश का यही हाल होता है।

इंडियन एक्सप्रेस ने बुधवार को प्रकाशित एक रिपोर्ट में गुजरात की बीजेपी सरकार की हरकत का खुलासा किया है।

रिपोर्ट के मुताबिक़ गांधीधाम के SEZ में देश के कुल दो तिहाई ऑक्सीजन सिलेंडर बनते हैं। पिछले 10 दिनों से SEZ के सभी प्लांट्स में ताला बंद है।

वजह ये कि सरकार ने औद्योगिक ऑक्सीजन के इस्तेमाल पर पाबंदी लगाई थी। लेकिन, आदेश में इन सिलेंडर निर्माता ईकाइयों को भी शामिल कर लिया गया। फिर 27 अप्रैल को गृह मंत्रालय को इलहाम हुआ तो एक 'स्पष्टीकरण' जारी किया गया। इसमें कहा गया कि ऑक्सीजन सिलेंडर बनाने वाले कारखानों को लिक्विड ऑक्सीजन की आपूर्ति की जाए। लेकिन, यह आदेश काग़ज़ों में ही सिमटकर रह गया। गुजरात सरकार के पास या तो आदेश की कॉपी नहीं पहुंची या फिर वहां की भाजपा सरकार को ऑक्सीजन की कमी से मर रहे लोगों की फिक्र नहीं है। हफ़्ते भर बाद भी सारे कारखाने बंद पड़े हुए हैं। उद्योग से जुड़े लोगों का दावा है कि उन्होंने ऑक्सीजन की आपूर्ति की कमी को लेकर सरकार के 'सर्वोच्च स्तर' पर अपनी चिंता ज़ाहिर की, लेकिन हुआ कुछ नहीं। गांधीधाम से ऑक्सीजन सिलेंडर की आपूर्ति देश के लगभग सभी राज्यों में होती है क्योंकि 100 में से 66 सिलेंडर यही बनते हैं। अभी हालत ये है कि सरकार विदेशों से भीख मांग रही है या फिर दोगुने-चौगुने दाम पर ऑक्सीजन सिलेंडर ख़रीद रही है। जो अपने कारखाने हैं, वहां ताला जड़कर बैठी हुई है। न विजय रुपाणी ने इसका पालन किया और न ही राज्य के खाद्य और औषधि प्राधिकरण के कानों पर जूं रेंगी। पूरा देश कुप्रबंधन का शिकार बना बैठा है. देश को जितने ऑक्सीजन की ज़रूरत है, उतना भारत में रोज़ बन सकता है.

हालात आपतकाल जैसे हैं। लेकिन जनसंहार के बीच भीषण अयोग्य प्रधानमंत्री टिनोपाल डालकर कुर्ता रंगने में जुटा है।